गुरु नानक – सबद ६२

हरि हरि जपहु पिआरिआ गुरमति ले हरि बोलि ॥

रागु सिरिरागु, गुरु नानक, गुरु ग्रंथ साहिब, २२

हरि हरि जपहु पिआरिआ गुरमति ले हरि बोलि ॥
मनु सच कसवटी लाईऐ तुलीऐ पूरै तोलि ॥
कीमति किनै न पाईऐ रिद माणक मोलि अमोलि ॥१॥
भाई रे हरि हीरा गुर माहि ॥
सतसंगति सतगुरु पाईऐ अहिनिसि सबदि सलाहि ॥१॥ रहाउ ॥
सचु वखरु धनु रासि लै पाईऐ गुर परगासि ॥
जिउ अगनि मरै जलि पाइऐ तिउ त्रिसना दासनि दासि ॥
जम जंदारु न लगई इउ भउजलु तरै तरासि ॥२॥
गुरमुखि कूड़ु न भावई सचि रते सच भाइ ॥
साकत सचु न भावई कूड़ै कूड़ी पांइ ॥
सचि रते गुरि मेलिऐ सचे सचि समाइ ॥३॥
मन महि माणकु लालु नामु रतनु पदार्थु हीरु ॥
सचु वखरु धनु नामु है घटि घटि गहिर ग्मभीरु ॥
नानक गुरमुखि पाईऐ दइआ करे हरि हीरु ॥४॥२१॥

सार: सार्थक बातचीत करना एक बगीचे की देखभाल करने जैसा है जहां हर भागीदार, वह जिज्ञासु साधक हो या ज्ञानी साधु, अंतर्दृष्टि को अंकुरित करने वाले बीज के रूप में काम करते हैं। हर अनुभव का आदान-प्रदान सत्य के प्रकाश की ओर बढ़ाता है। इस बातचीत को खुले दिल से अपनाकर हम गहरी आध्यात्मिक जड़ें जमा सकते हैं और हमारी जिज्ञासा ज्ञान के वृक्ष की शाखाओं की तरह फैल सकती है जिससे ज्ञान की समझ को पनप और संबंध, विकास और परिवर्तन को बढ़ावा मिल सकता है।

हरि हरि जपहु पिआरिआ गुरमति ले हरि बोलि ॥
हे प्यारे साथियों, सारी सृष्टि की एकता पर विचार करो और ऐसा विवेक प्राप्त करो जो एकता पर विचार व्यक्त करने की शक्ति प्रदान करता है।

मनु सच कसवटी लाईऐ तुलीऐ पूरै तोलि ॥
अपने मन के विचारों को जो परम नैतिकता की कसौटी है उसपर परखें और सत्यापित कर देखें कि क्या यह सच के साथ संतुलित है।

कीमति किनै न पाईऐ रिद माणक मोलि अमोलि ॥१॥
प्रेम से भरे हृदय की असली क़ीमत किसी बहुमूल्य दुर्लभ रत्न की तरह नहीं मापी जा सकता। (१)

भाई रे हरि हीरा गुर माहि ॥
हे साथी ज्ञान के माध्यम से प्राप्त ध्यानपूर्ण चिंतन का ख़ज़ाना मन में रहता है।

सतसंगति सतगुरु पाईऐ अहिनिसि सबदि सलाहि ॥१॥ रहाउ ॥
निश्च्छल साधकों की संगति में उन लोगों के बीच प्रामाणिक अंतर्दृष्टि पनपती है जो दिन-रात सार्थक आध्यात्मिक बातचीत में भाग लेते हैं। (१)(विराम)

सचु वखरु धनु रासि लै पाईऐ गुर परगासि ॥
सच्चा व्यापार सार्थक बातचीत का प्रतिनिधित्व करता है, धन ज्ञान प्राप्त करने और पूंजी सद्गुणों को अपनाने की प्रतीक है। यह ज्ञान के आलोक की ओर ले जाती है।

जिउ अगनि मरै जल पाइऐ तिउ त्रिसना दासन दास ॥
जिस तरह जल से अग्नि समाप्त हो जाती है, उसी तरह कामनाओं की प्यास विनम्र और समर्पित व्यक्ति के अधीन हो जाती हैं।

जम जंदारु न लगई इउ भउजलु तरै तरासि ॥२॥
जब मृत्यु के भय पर विजय प्राप्त होती है तब यह स्वयं और दूसरों के लिए जीवन की बाधाओं को दूर करने की शक्ति प्रदान करता है। जैसे विशाल, उत्तेजित महासागर को नाव चला कर पार करना। (२)

गुरमुखि कूड़ु न भावई सचि रते सच भाइ ॥
आध्यात्मिक रूप से जागरूक लोग झूठ से आकर्षित नहीं होते। वह परस्पर एकत्व के जुड़ाव के सत्य की वास्तविकता के प्रति समर्पित रहते हैं।

साकत सचु न भावई कूड़ै कूड़ी पांइ ॥
बेईमान एकता के सच का जश्न नहीं मनाते, उनका धोखा झूठ की नींव पर टिका होता है।

सचि रते गुरि मेलिऐ सचे सचि समाइ ॥३॥
जो ईमानदारी को अपनाते हैं वह सर्वव्यापी वास्तविकता के बारे में ज्ञान प्राप्त करते हैं और एकता के सत्य में लीन रहते हैं। (३)

मन महि माणकु लालु नामु रतनु पदार्थु हीरु ॥
जो मन चिंतन को मूल्यवान रत्न मानता है वह अमूल्य गुण का प्रतीक है।

सचु वखरु धनु नामु है घटि घटि गहिर ग्मभीरु ॥
सच्ची पूँजी आत्मचिंतन के मूल्यवान अभ्यास का प्रतीक है जो प्रकृति में सम्मिलित एक गहन गुण है।

नानक गुरमुखि पाईऐ दइआ करे हरि हीरु ॥४॥२१॥
नानक कहते हैं कि आध्यात्मिक साधक एकता के अभ्यास की कृपा से ज्ञान प्राप्त करते हैं जो कि अथाह मूल्य का गुण है। (४)(२१)

तत्त्व: गुरु नानक कहते हैं कि असली धन भौतिक संपत्ति नहीं है बल्कि आत्म-चिंतन की ईमानदारी से खोज- अस्तित्व के सार में सम्मिलित गुण है । शांत चिंतन में, आत्मा गहन अंतर्दृष्टि प्रकट करती है जो सांसारिक जीवन से परे है। यह ज्ञान उन लोगों को मिलता है जो ब्रह्मांड के साथ एकता का अभ्यास करने के माध्यम से दिव्यता का पालन करते हैं।

सबद व्याख्या **विनइंदर कौर** और **अमरदीप सिंह**

Oneness In Diversity Research Foundation

वेबसाइट: OnenessInDiversity.com

ईमेल: onenessindiversityfoundation@gmail.com